॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
615

श्रीनागभट्टप्रणीतः

त्रिपुरासारसमुच्चयः

TRIPURĀ-SĀRA-SAMUCCAYAH

गोविन्दशर्मकृत'सम्प्रदायदीपिका'व्याख्यासहित-
'कौलिनी'हिन्दीव्याख्यासमन्वितः

कौलिनीभाष्यकारः

श्रीमधुसूदनप्रसादशुक्लः

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

श्रीविद्यारण्य का जीवनकाल ईसा की ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्ध के बाद का है। इस तरह श्रीविद्यार्णव का रचना-काल ईसा की ग्यारहवीं सदी का उत्तरार्ध ठहरता है। चूँकि श्रीविद्यार्णव में त्रिपुरासारसमुच्चय के श्लोक उद्धृत हैं, अतः यह अनुमान लगाने में कोई अत्युक्ति नहीं है कि इस ग्रन्थ की रचना ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्ध या इससे पूर्व हो चुकी थी; क्योंकि संचारसुविधा-विहीन उस युग में किसी ग्रन्थ को लिखे जाने के बाद प्रसारित होने और प्रामाणिक ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित होने में पचास वर्ष का समय लगाना सर्वथा स्वाभाविक है।

पटलसार

जैसा कि निवेदन किया जा चुका है; इस ग्रन्थ में कुलनायिका के आराधन-क्रम के विभिन्न बिन्दुओं का संस्पर्श किया गया है, अतएव ग्रन्थ के समग्र प्रतिपाद्य विषयों से अवगत होने के लिए इसके प्रत्येक पटल की विषयवस्तु से अवगत होना असंगत नहीं; अपितु सन्दर्भ-सापेक्ष है।

प्रथम पटल—इस ग्रन्थ के प्रथम पटल में मात्र १८ श्लोक हैं। इस पटल में मंगलाचरण के बाद कुलनायिका त्रिपुरा के अर्चन-उपक्रम में भूतशुद्धि, मणिद्वीप तथा उसमें मणिमण्डप, रत्नसिंहासन, उस पर देवी के आसनबीज और उस पर प्रतिष्ठिता देवी के ध्यान का निरूपण किया गया है।

द्वितीय पटल—भूतशुद्धि और कुलनायिका का ध्यान बताने के बाद द्वितीय पटल में पाँच बाणों के बीज, उनका न्यास, कलान्यास, विद्यान्यास, पञ्च कामबीज और कामन्यास का निरूपण करने के बाद त्र्यक्षरी बाला विद्या के तीनों बीजों का उद्धार और उनके जप-फल का निरूपण किया गया है। अक्षमाला से इस मन्त्र के जप की वरीयता रेखांकित करने के बाद चतुरक्षरी मन्त्र का उद्धार तथा अन्त में दीपनी विद्या का उद्धार बताया गया है; क्योंकि शिव से अभिशप्ता होने के कारण जब तक इस प्रसुप्ता विद्या को जागृत या दीपित नहीं कर लिया जाता, उसकी साधना फलवती नहीं होती। इस पटल में ३९ श्लोक हैं।

तृतीय पटल—विगत पटल में मन्त्रयोग का निरूपण करने के बाद इस पटल में नाड़ीविज्ञान और प्राणायाम विधि-सहित स्वरविज्ञान की विवेचना की गई है। चौंवन श्लोक वाले इस पटल में वायुसञ्चार का प्रकार, प्राणों की आश्रयभूता नाडियों का निरूपण, प्राणवायु से तत्त्वोदय एवं उसके फलों, प्राण-संयम विधि, अगर्भ और सगर्भ प्राणायाम और उसकी फलश्रुति बताने के बाद प्राणायाम से होने वाले लाभों का निरूपण किया गया है।

चतुर्थ पटल—इस पटल में योनिमुद्राबन्ध विधि, ब्रह्मग्रन्थि के भेदन की विधि, कुण्डलिनीजागरण की विधि, अमृतपान की विधि, मन्त्रों के छिन्न आदि ४९ दोष तथा योनिमुद्रा से इन दोषों के शमन की विधि का निरूपण किया गया है। इस पटल में २३ श्लोक हैं।

पञ्चम पटल—इस पटल का प्रतिपाद्य विषय षट्चक्र-विज्ञान है। अतः इस पटल में मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा—इन चक्रों की शरीर में संस्थिति, इनमें से प्रत्येक चक्र का ध्यान और ध्यानपूर्वक इनमें से प्रत्येक चक्र के भेदन से भूत-भविष्य-दर्शन, वार्द्धक्य-विजय, अजरता-अमरता-प्राप्ति, आकाशगमन-सिद्धि, मृतक को जीवन-दानशक्ति, पूर्व जन्म-स्मृति, देवताओं, गन्धर्वों, यक्षों आदि के साथ परमेश्वर दर्शन आदि फलों के निरूपण-सहित शरीर में स्थित लिंगों, सहस्रार तथा षोडशी कला का वर्णन किया गया है। इस पटल में ५१ श्लोक हैं।

षष्ठ पटल—इस पटल में स्वयम्भू आदि लिंगत्रय में बाला त्रिपुरा के तीनों बीजों के ध्यान की विधि और ध्यान के फल-निरूपण के बाद कुण्डलिनी के उत्थापन एवं संचालन में दक्ष एवं पटु साधकों द्वारा कुण्डलिनी-मुख में वायु के हवन की अत्यन्त गोपनीय एवं सद्गुरु से प्राप्तव्य विधिविशेष का संकेत दिया गया है। तत्पश्चात् ६ श्लोकों में वागीश्वरी के रूप में कुलनायिका का ध्यान और ध्यानफल का निरूपण किया गया है। इस पटल में २८ श्लोक हैं।

सप्तम पटल—इस पटल में तीन प्रकार के यन्त्रों की लेखन-विधि बताई गई है। ये यन्त्र हैं—१. सर्वरक्षाकार त्रैपुर यंत्र, २. कामराज यन्त्र और ३. वशीकरण यंत्र; जिसका नाम नहीं बताया गया है। यन्त्र-लेखन के क्रम में सर्वप्रथम यन्त्र-लेखन हेतु साधक की शारीरिक और मानसिक तैयारी, यन्त्र लिखने के द्रव्य तथा अन्य उपकरणों का विवरण देने के बाद यन्त्र-स्वरूप और उसका लेखनक्रम समझाया गया है। तत्पश्चात् यह बताया गया है कि साधारण मनुष्य ही नहीं; पुराकाल में स्वयं भगवान् शिव, भगवान् विष्णु, प्रजापिता ब्रह्मा, सूर्य, बृहस्पति आदि ने भी इस यन्त्र को धारण किया था। प्राणप्रतिष्ठा-युक्त इस यन्त्र को धारण करने से सभी प्रकार की विपत्तियों और आपदाओं से धारणकर्ता की रक्षा होती है। दूसरा यंत्र कामराज यन्त्र है, जो यथानाम सबको आकर्षित करके वशवर्ती करने वाला है। तीसरे यंत्र का भी यही गुण-धर्म है। इस पटल में २३ श्लोक हैं।

अष्टम पटल—अष्टम पटल में कुलनायिका त्रिपुरा के बाह्य अर्चन की विधि विस्तार से बताई गई है। पटल के प्रारम्भ में ही यह बता दिया गया है कि कुलनायिका की यह रहस्यपूजा अत्यन्त गोपनीय स्थान में अत्यन्त गुप्त विधि से सम्पन्न की जाती है। पशुभाव में स्थित मनुष्य ही नहीं; गाय-बैल आदि पशु तथा पक्षियों की भी इस पर दृष्टि

नहीं पड़नी चाहिए। गोपनीयता की इस अनिवार्यता का निरूपण करने के बाद पञ्चशुद्धि (स्थानशुद्धि, देहशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, देवशुद्धि और मन्त्रशुद्धि) का विधान एवं शोधन-मन्त्रों का उद्धार बताया गया है। इसके बाद 'अर्चन यन्त्र' का स्वरूप बताया गया है। त्रिकोण, पञ्चदल कमल, षड्दल कमल, अष्टदल कमल तथा भूपुर-युक्त यह अर्चन मन्त्र ज्ञानार्णव, विश्वसारतन्त्र तथा मन्त्रमहोदधि आदि में बताये गये नव-योन्यात्मक यन्त्र से सर्वथा भिन्न है; अतः यहाँ बताये गये आवरण-अर्चन का क्रम भी भिन्न है। पात्रासादन के बाद गुरु-पंक्तिपूजन, पीठपूजन, कुलनायिका के आह्वान-पूर्वक षोडशोपचार अर्चन के बाद आवरणदेवताओं के अर्चन का विधान बताया गया है। फलश्रुति बताते हुए कहा गया है कि जो साधक प्रतिदिन इस विधि से कुलनायिका का पूजन करता है, वह भगवान् शिव के समान आप्तकाम हो जाता है। इस पटल में ५० श्लोक हैं।

नवम पटल—पूजन-विधान का निरूपण करने के बाद इस पटल में हवन के लिए कुण्डनिर्माण-विधि का निरूपण किया गया है। इस पटल में चतुरस्र, योनि, अर्धचन्द्राकार, त्रिकोणाकार, वृत्ताकार, षट्कोणाकार, पद्माकार और अष्टकोणाकार—ये आठ प्रकार के कुण्ड तथा पञ्चकोणाकार और सप्तकोणाकार अर्थात् कुल मिलाकर दस रूपाकार के कुण्डों का उल्लेख है। इन कुण्डों का रूपाकार बताने के साथ इनकी गहराई, कुण्डों पर मेखला(ओं) का निर्माण तथा उनका मान, योनि और नाभि के आकार एवं मान का निरूपण किया गया है। पटल के अन्त में कामनाभेद से कुण्डनिर्माण एवं आहुतिमान से कुण्ड के मान का निरूपण किया गया है। इस पटल में ३६ श्लोक हैं।

दशम पटल—कुण्डनिर्माण-विधि बताने के बाद इस पटल में हवन-विधि का निरूपण किया गया है। इष्ट मन्त्र से सुसंस्कृत अग्नि में यथाविधान इष्टदेवता को कल्पोक्त द्रव्य की आहुति देना मन्त्रसाधना का उतना ही अनिवार्य और उतना ही महत्त्वपूर्ण अंग है, जितना महत्त्वपूर्ण है—मन्त्र का जप। विडम्बना यह है कि सुदक्ष एवं कर्मकाण्ड-मर्मज्ञ आचार्यों के सानिध्य के अभाव में आज लोहे या तांबे के कुण्ड में लकड़ी जलाकर उसमें घी और तिल जलाना हवन का पर्याय बन गया है। अतः यह पटल केवल साधकों के लिए ही नहीं; अपितु ज्ञानपिपासु सभी जनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत कुण्ड-संस्कार, अग्नि आनयन, वागीश्वरी-पूजन, अग्नि-प्रज्ज्वलन, न्यास, अग्नि के पन्द्रह संस्कार, व्याहृति होम, महागणपति होम, इष्टदेवता का आह्वान तथा उनका पूजन, अंगदेवताओं को आहुति-दान के बाद इष्ट मंत्र से प्रधान हवन के बाद विसर्जनान्त कर्म आते हैं। इस पटल में ७६ श्लोक हैं।

ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषयों की उपर्युक्त पटलवार विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि ग्रन्थ के १० (दस) पटलों में से ६ पटल मन्त्रसाधनापरक और चार पटल नाड़ी-विज्ञान, स्वर-विज्ञान, प्राणायाम तथा कुण्डलिनी-जागरण-प्रभृति हठयोग-परक साधना से

सम्बन्धित हैं। अतः यह सहज जिज्ञासा होती है कि मन्त्र-साधनापरक इस ग्रन्थ में हठयोग-परक उपर्युक्त विषयों के निरूपण को इतना स्थान और महत्त्व क्यों दिया गया? मन्त्र-साधना और कुण्डलिनी-साधना का परस्पर प्रत्यक्ष या परोक्षतः क्या सम्बन्ध है? यदि हम इन पटलों का गम्भीरता से अध्ययन करें तो इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। श्रीतत्त्वचिन्तामणि की भूमिका में इसका विशद् निरूपण किया गया है। संक्षेप में यह समझ लीजिये कि चाहे मन्त्र-साधना हो, चाहे कुण्डलिनी-साधना; दोनों के लिए मन की एकाग्रता अनिवार्य है। मन की एकाग्रता प्राणायाम पर निर्भर है। इसी तरह इनका परस्पर सम्बन्ध बनता जाता है। इसीलिए देशिकेन्द्र नागभट्ट ने दस में से चार पटलों में उनका निरूपण किया है।

प्रकाशन का इतिवृत

वर्ष १९८३ ईसवीं में दो पृष्ठों की अंग्रेजी भूमिका के साथ प्रकाशित (प्रथम) संस्करण में बताया गया है कि आज से (अर्थात् १९८३ से) लगभग एक सौ-वर्ष पूर्व इसका प्रकाशन हुआ था; मगर कालान्तर में इसकी एक भी मुद्रित प्रति शेष नहीं बची। अतः ग्रन्थ का मूल पाठ और गोविन्दाचार्य की व्याख्या के महत्त्वपूर्ण एवं समझ में आने वाले अंशों को जोड़कर ग्रन्थ का (१९८३ में) प्रकाशन किया जा रहा है। वर्ष १९८३ के बाद इस ग्रन्थरत्न के मूल तथा/अथवा किसी भाषा में व्याख्या-सहित प्रकाशन की कोई सूचना नहीं है। अतः यहाँ प्रस्तुत 'कौलिनी' व्याख्या को इस ग्रन्थ-रत्न का प्रथम हिन्दी व्याख्या होने का गौरव प्राप्त है।

कौलिनी-रहस्य—यद्यपि सरसरी तौर पर इस ग्रन्थ का अध्ययन करने से यह ज्ञात नहीं होता कि यह ग्रन्थरत्न कुलाचार-परक है, मगर तीन स्थलों पर ऐसे अन्तःसाक्ष्य हैं, जो इस ग्रन्थ को कुलाचारपरक सिद्ध करते हैं।

१. प्रथम साक्ष्य है—अष्टम पटल का दूसरा श्लोक; जिसमें कहा गया है कि कुलनायिका की रहस्यपूजा तहखाने में इतने गोपनीय तरीके से की जाय कि उस पर पशुजनों की दृष्टि भी नहीं पड़े। कुलनायिका के रहस्य अर्चन की यह गोपनीयता कुलाचारपरक है। दक्षिणाचारी अर्चन में इस गोपनीयता की जरूरत नहीं है।

२. दूसरा साक्ष्य है—इसी पटल का श्लोक छः जिसमें कुलनायिका के अर्चनयन्त्र लेखन के द्रव्य में 'स्वयम्भू पुष्प' का स्पष्ट उल्लेख है। स्वयम्भू पुष्प और खपुष्प आदि ऐसे द्रव्य हैं, जो केवल कुलाचार में प्रशस्त हैं।

३. तीसरा प्रमाण है—इस ग्रन्थ का अन्तिम श्लोक (१०/६९), जिसमें 'सुसंस्कृत कादम्बरी' (कारणद्रव्य) का कुण्डलिनी-मुख में हवन करने का निर्देश दिया गया है। यह चक्रार्चन की पात्र-वन्दना है।

विषय-सूची

पञ्चम पटल पृ.सं. ६५-८६

इक्यावन श्लोकों में निबद्ध इस पटल का प्रतिपाद्य विषय षट्चक्र-विज्ञान है। अतः इस पटल में मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा—इन चक्रों की शरीर में संस्थिति, इनमें से प्रत्येक चक्र का ध्यान और ध्यानपूर्वक इनमें से प्रत्येक चक्र के भेदन से भूत-भविष्य-दर्शन, वार्द्धक्य-विजय, अजरता-अमरता-प्राप्ति, आकाशगमन-सिद्धि, मृतक को जीवन-दानशक्ति, पूर्व जन्म-स्मृति, देवताओं, गन्धर्वों, यक्षों आदि के साथ परमेश्वर दर्शन आदि फलों के निरूपण-सहित शरीर में स्थित लिंगों, सहस्रार तथा षोडशी कला का वर्णन है।

षष्ठ पटल पृ.सं. ८७-९८

अट्ठाईस श्लोकों में निबद्ध इस पटल में स्वयम्भू आदि लिंगत्रय में बाला त्रिपुरा के तीनों बीजों के ध्यान की विधि और ध्यान के फल-निरूपण के बाद कुण्डलिनी के उत्थापन एवं संचालन में दक्ष एवं पटु साधकों द्वारा कुण्डलिनी-मुख में वायु के हवन की अत्यन्त गोपनीय एवं सद्‌गुरु से प्राप्तव्य विधिविशेष का संकेत दिया गया है। तत्पश्चात् ६ श्लोकों में वागीश्वरी के रूप में कुलनायिका का ध्यान और ध्यानफल का निरूपण है।

सप्तम पटल पृ.सं. ९९-१०५

तेईस श्लोकों में निबद्ध इस पटल में तीन प्रकार के यन्त्रों की लेखन-विधि बताई गई है। ये यन्त्र हैं—१. सर्वरक्षाकार त्रैपुर यंत्र, २. कामराज यन्त्र और ३. वशीकरण यंत्र; जिसका नाम नहीं बताया गया है। यन्त्र-लेखन के क्रम में सर्वप्रथम यन्त्र-लेखन हेतु साधक की शारीरिक और मानसिक तैयारी, यन्त्र लिखने के द्रव्य तथा अन्य उपकरणों का विवरण देने के बाद यन्त्र-स्वरूप और उसका लेखनक्रम समझाया गया है। तत्पश्चात् यह बताया गया है कि साधारण मनुष्य ही नहीं; पुराकाल में स्वयं भगवान् शिव, भगवान् विष्णु, प्रजापिता ब्रह्मा, सूर्य, बृहस्पति आदि ने भी इस यन्त्र को धारण किया था। प्राणप्रतिष्ठा- युक्त इस यन्त्र को धारण करने से सभी प्रकार की विपत्तियों और आपदाओं से धारणकर्ता की रक्षा होती है। दूसरा यंत्र कामराज यन्त्र है, जो यथानाम सबको आकर्षित करके वशवर्ती करने वाला है। तीसरे यंत्र का भी यही गुण-धर्म है।

अष्टम पटल पृ.सं. १०६-१२२

५० श्लोकों में निबद्ध इस पटल में कुलनायिका त्रिपुरा के बाह्य अर्चन की विधि विस्तार से बताई गई है। पटल के प्रारम्भ में ही यह बता दिया गया है कि कुलनायिका की यह रहस्यपूजा अत्यन्त गोपनीय स्थान में अत्यन्त गुप्त विधि से सम्पन्न की जाती है। पशुभाव में स्थित मनुष्य ही नहीं; गाय-वैल आदि पशु तथा पक्षियों की भी इस पर दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए। गोपनीयता की इस अनिवार्यता का निरूपण करने के बाद पञ्चशुद्धि (स्थानशुद्धि, देहशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, देवशुद्धि और मन्त्रशुद्धि) का विधान एवं शोधन-मन्त्रों का उद्धार बताया गया है। इसके बाद 'अर्चन यन्त्र' का स्वरूप बताया गया है। त्रिकोण, पञ्चदल कमल, षड्दल कमल, अष्टदल कमल तथा भूपुर-युक्त यह अर्चन मन्त्र ज्ञानार्णव, विश्वसारतन्त्र तथा मन्त्रमहोदधि आदि में बताये गये नव-योन्यात्मक यन्त्र से सर्वथा भिन्न है; अतः यहाँ बताये गये आवरण-अर्चन का क्रम भी भिन्न है। पात्रासादन के बाद गुरु-पंक्तिपूजन, पीठपूजन, कुलनायिका के आह्वान-पूर्वक षोडशोपचार अर्चन के बाद आवरणदेवताओं के अर्चन का विधान बताया गया है। फलश्रुति बताते हुए कहा गया है कि जो साधक प्रतिदिन इस विधि से कुलनायिका का पूजन करता है, वह भगवान् शिव के समान आप्तकाम हो जाता है।

नवम पटल पृ.सं. १२३-१३५

छत्तीस श्लोकों में निबद्ध इस पटल में हवन के लिए कुण्डनिर्माण-विधि का निरूपण किया गया है। इस पटल में चतुरस्र, योनि, अर्धचन्द्राकार, त्रिकोणाकार, वृत्ताकार, षट्कोणाकार, पद्माकार और अष्टकोणाकार—ये आठ प्रकार के कुण्ड तथा पञ्चकोणाकार और सप्तकोणाकार अर्थात् कुल मिलाकर दस रूपाकार के कुण्डों का उल्लेख है। इन कुण्डों का रूपाकार बताने के साथ इनकी गहराई, कुण्डों पर मेखला(ओं) का निर्माण तथा उनका मान, योनि और नाभि के आकार एवं मान का निरूपण किया गया है। पटल के अन्त में कामनाभेद से कुण्डनिर्माण एवं आहुतिमान से कुण्ड के मान का निरूपण किया है।

छिहत्तर श्लोकों में संग्रथित इस पटल में हवन-विधि का निरूपण किया गया है। इष्ट मन्त्र से सुसंस्कृत अग्नि में यथाविधान इष्टदेवता को कल्पोक्त द्रव्य की आहुति देना मन्त्रसाधना का उतना ही अनिवार्य और उतना ही महत्त्वपूर्ण अंग है, जितना महत्त्वपूर्ण है—मन्त्र का जप। विडम्बना यह है कि सुदक्ष एवं कर्मकाण्ड-मर्मज्ञ आचार्यों के सानिध्य के अभाव में आज लोहे या तांबे के कुण्ड में लकड़ी जलाकर उसमें घी और तिल जलाना हवन का पर्याय बन गया है। अतः यह पटल केवल साधकों के लिए ही नहीं; अपितु ज्ञानपिपासु सभी जनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत कुण्ड-संस्कार, अग्नि आनयन, वागीश्वरी-पूजन, अग्नि-प्रज्ज्वलन, न्यास, अग्नि के पन्द्रह संस्कार, व्याहृति होम, महागणपति होम, इष्टदेवता का आह्वान तथा उनका पूजन, अंगदेवताओं को आहुति-दान के बाद इष्ट मंत्र से प्रधान हवन के बाद विसर्जनान्त कर्म विवेचित हैं।

●